

विचार बिन्दु

अपना नाम सदा कायम रखने के लिए मनुष्य बड़े से बड़ा जोखिम उठाने, धन खर्च करने, हर तरह के कष्ट सहने, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाता है। –सुकरात

हर बारिश के बाद मजबूत होता राजस्थान : आपदा प्रबंधन का नया अध्याय

राजस्थान को प्रायः शुष्क और रेगिस्तानी प्रदेश के रूप में पहचाना जाता है, लेकिन जब मानसून अपना रंग दिखाता है तो यहां की धरती पर बाढ़ जैसी आपदाएं भी असामान्य नहीं रहती। इस वर्ष भी मानसून के बाद कई जिलों में भारी वर्षा ने जहाँ सूखे की चिंताओं को कुछ हद तक कम किया, वहीं दूसरी तरफ जलभराव, बाढ़, घर ढहने, सड़कों के कटाव और फसलों की बर्बादों जैसी समस्याएं खड़ी कर दी। राजस्थान में आपदा प्रबंधन की जरूरत केवल सूखे या अकाल तक सीमित नहीं, बल्कि अचानक आई बाढ़ और उससे उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने में भी बराबर की है। सवाल यह है कि सरकार और समाज किस तैयारी के साथ इन आपदाओं का सामना करते हैं और प्रभावित जनता तक किस हद तक राहत व पुनर्वास पहुंचता है।

राजस्थान में आपदाओं का स्वरूप भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहा है। पश्चिमी जिलों में लू और सूखा बड़ी चुनौती है, जबकि पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जिलों में भारी वर्षा के बाद नदियों का उफान प्रलयकारी स्थितियां उत्पन्न कर देता है। उदयपुर, कोटा, झालावाड़, बांसवाड़ा, सवाईमाधोपुर और भरतपुर जैसे जिलों में मानसून की अधिक वर्षा अक्सर बाढ़ का कारण बन जाती है। वहीं, मरुभूमि से जुड़े जोधपुर, बाड़मेर व जैसलमेर में कहीं-कहीं कम समय में हुई तेज वर्षा भी जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर देती है। ऐसे में आपदा प्रबंधन को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखना आवश्यक है, जिसमें रोकथाम, तैयारी, त्वरित राहत और दीर्घकालीन पुनर्वास सभी शामिल हों।

राजस्थान सरकार ने इस दिशा में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (RSDMA) और जिला स्तरिय आपदा प्रबंधन प्राधिकरणों की स्थापना की है। इनके तहत आपदाओं की समय से पूर्व चेतावनी, राहत कार्यों का समन्वय और पुनर्वास की नीतियां लागू की जाती हैं। भारतीय मौसम विभाग के साथ समन्वय स्थापित कर राज्य सरकार अब अधिक सटीक पूर्वानुमान उपलब्ध कराती है। ग्रामीण व शहरी दोनों क्षेत्रों में बाढ़ चेतावनी प्रणाली लागू की जा रही है। गांवों में पंचायत स्तर पर आपदा प्रबंधन समितियां बनाई गई हैं जो संकट की घड़ी में त्वरित निर्णय लेकर लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकें।

सरकार द्वारा हर वर्ष मानसून से पहले ‘पूर्व आपदा तैयारी अभियान’ चलाया जाता है, जिसमें निचले इलाकों की सफाई, जलनिकासी व्यवस्था, कमजोर मकानों की समय और संवेदनशील स्थानों की पहचान शामिल है। मानसून के दौरान जैसे ही भारी वर्षा और बाढ़ की स्थिति बनती है, प्रभावित क्षेत्रों में त्वरित राहत सामग्री पहुंचाने के लिए प्रशासन को निर्देशित किया जाता है। खाद्य सामग्री, कंबल, तिरपाल और पीने के पानी की आपूर्ति प्राथमिक स्तर पर की जाती है। पशुओं के लिए चारे और दवाइयों की आपूर्ति भी योजनाओं का हिस्सा है, क्योंकि ग्रामीण आबादी का बड़ा हिस्सा पशुपालन पर ही आधारित है।

आपदा प्रबंधन की प्रक्रिया केवल राहत पहुंचाने तक सीमित नहीं है। सरकार ने पुनर्वास और क्षतिपूर्ति नीतियों को भी लागू किया है। प्रधानमंत्री आपदा राहत कोष और मुख्यमंत्री सहायता कोष से प्रभावितों को मुआवजा उपलब्ध कराया जाता है। घर ढहने, खेतों में खड़ी फसल खराब होने और पशुओं की मौत पर निर्धारित दर से सहायता दी जाती है। कई बार संकट इतना व्यापक होता है कि केंद्र सरकार की सहायता भी ली जाती है। हाल के वर्षों में तकनीक आधारित मैपिंग और सर्वेक्षण प्रणाली अपनाई गई हैं जिससे नुकसान का सटीक आकलन आधारित मैपिंग और सर्वेक्षण प्रणाली अपनाई गई हैं जिससे नुकसान का सटीक आकलन

सरकार द्वारा हर वर्ष मानसून से पहले

‘पूर्व आपदा तैयारी अभियान’ चलाया

जाता है, जिसमें निचले इलाकों की

सफाई, जलनिकासी व्यवस्था, कमजोर

मकानों के सर्वे और संवेदनशील स्थानों

की पहचान शामिल हैं। मानसून के दौरान

जैसे ही भारी वर्षा और बाढ़ की स्थिति

बनती है, प्रभावित क्षेत्रों में त्वरित राहत

सामग्री पहुंचाने के लिए प्रशासन को

निर्देशित किया जाता है।

बाद सड़कों, पुलिया और विद्युत व्यवस्था को तत्काल बहाल करना भी आपदा प्रबंधन का अहम हिस्सा होता है। राजस्थान में ‘आपदा राहत त्वरित प्रतिक्रिया बल’ (SDRF) और जरूरत पड़ने पर राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (NDRF) की इकाइयां तैनात की जाती हैं। ये टीमें न केवल राहत और बचाव कार्य करती हैं बल्कि संकट के समय प्रशिक्षण लेकर गांव-गांव में स्वयंसेवकों और युवाओं को तैयार भी करती हैं ताकि स्थानीय स्तर पर प्रतिक्रिया की क्षमता भी बढ़े।

सरकारी योजनाओं में आर्थिक पुनर्वास भी शामिल है। बाढ़ और आपदा से प्रभावित किसानों को ब्याजमुक्त या कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराया जाता है। कृषि विभाग विशेष पैकेज घोषित करता है जिसमें मुफ्त बीज, खाद और कृषि उपकरण दिए जाते हैं। कृषि बीमा योजना के अंतर्गत पंजीकृत किसानों को नुकसान की भरपाई भी की जाती है। पशुपालन व कृषि कार्यों के साथ छोटे व्यापारियों को भी राहत कोष से सहायता राशि उपलब्ध कराई जाती है ताकि उनकी आजीविका पुनः पटरी पर आ सके।

शहरी क्षेत्रों की स्थिति अलग है। जयपुर, जोधपुर और अजमेर जैसे शहरों में जलभराव महानगरीय जीवन को ठप कर देता है। ऐसे में नगर निगम और विकास प्राधिकरण जलनिकासी के स्थायी समाधान पर कार्य कर रहे हैं। स्मार्ट सिटी योजना और अमृत मिशन के अंतर्गत जलभराव की समस्या से निपटने के लिए अंडरग्राउंड ड्रेनेज और स्टॉम वाटर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट्स चलाए जा रहे हैं।

इस पूरे परिदृश्य में यह भी जरूरी है कि जनता के बीच आपदा प्रबंधन के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाई जाए। अक्सर देखा गया है कि अचानक आई बाढ़ में लोग असावधानी से अपनी जान जोखिम में डाल देते हैं। गांवों और कस्बों में सामुदायिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाने लगे हैं जहां आपातकाल में बचाव की तकनीकें, प्राथमिक उपचार और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचने की रणनीति सिखाई जाती है।

राजस्थान में आपदा प्रबंधन की चुनौतियां इसलिए भी बड़ी हैं क्योंकि प्रदेश का भौगोलिक क्षेत्रफल बहुत विशाल है और संसाधन सीमित हैं। लेकिन सकारात्मक पक्ष यह है कि हाल के वर्षों में प्रशासन ने तकनीकी साधनों का उपयोग बढ़ाया है। ड्रोन सर्वेक्षण, डिजिटल रिपोर्टिंग और मोबाइल एप आधारित आपदा निगरानी प्रणाली आज आपदा प्रबंधन को अधिक प्रभावी बना रही है।

आवश्यकता इस बात की है कि आपदा प्रबंधन को केवल सरकारी कामकाज तक सीमित न माना जाए। यह सामाजिक जिम्मेदारी है जिसमें नागरिक समाज, पत्रकारिता, गैर सरकारी संगठन और स्थानीय समुदाय सबका भागीदारी जरूरी है। यदि हर स्तर पर बेहतर समन्वय और समय पर कार्यवाही हो, तो बाढ़ व पुनर्वास की प्रक्रिया तेज और पारदर्शी बनेगी।

राजस्थान में मानसून के बाद आपदाएं एक स्थायी यथार्थ हैं। लेकिन इन्हें संकट नहीं, बल्कि आपसी सहयोग और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से समाज के सामर्थ्य को परखने का अवसर समझा जाना चाहिए। यदि राज्य सरकार की योजनाओं के साथ जनता का सक्रिय सहयोग जुड़ा, तो हर मानसून के बाद राजस्थान पहले से ज्यादा मजबूत और तैयार खड़ा नजर आएगा।

–अतिथि सम्पादक,

अविनाश जोशी,

वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

संपादकीय

शॉर्ट सैलरों के लिए भी देश में बने नियामक कानून



डॉ. सुबोध अग्रवाल

शॉर्ट सेलरों द्वारा हिडन एजेंडा के तहत समय समय पर रिपोर्टों की विश्वसनीयता पर सवाल उठते रहे हैं। ऐसे में इस तरह के शॉर्ट सेलरों को एक सीमा तक किसी दायरें में सीमित करना जरूरी हो गया है। अड़ानी और वेदांता के संबंध में हिण्डनवर्ग और वायसराय रिसर्च द्वारा जारी रिपोर्टों में आंकड़ों के नकारात्मक विश्लेषण के बाद के हालातों को देखते हुए अब भारत में भी शॉर्ट सेलरों पर अंकुश के लिए नियामक बनना समय की मांग हो गई है।

सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति जे वाई चन्द्रचूड द्वारा अमेरिकी शॉर्ट सेलर विश्लेषक वायसराय रिसर्च की वेदांता समूह को

लेकर जारी रिपोर्ट को सिरे से खारिज कर साफ कर दिया कि वायसराय द्वारा जारी रिपोर्ट वेदांता समूह को लेकर भ्रमित करने वाली रिपाट जारी की गई। हालांकि वायसराय ने वेदांता की एजीएम के ठीक एक दिन पहले यह रिपोर्ट जारी कर वेदांता की साख को प्रभावित करने का प्रयास किया पर वेदांता ने जिस तरह से रिपोर्ट को सिरे से खारिज किया उससे दूसरे दिन ही वेदांता के शेयर पूर्व स्थिति में आ गये। यह तो एक उदाहरण मात्र है।

इससे पहले हिण्डनवर्ग द्वारा अड़ानी समूह को निशाने पर लेने को जो प्रयास किये थे वे भी जगजाहिर है। पिछले दिनों विदेशी शॉर्ट सेलर अपनी रिपोर्टों में भारतीय बड़ी कंपनियों को ही निशाना बनाते रहे हैं। दरअसल शॉर्ट सेलर विश्लेषकों द्वारा जारी रिपोर्टें आधार पर बड़े निवेशक निवेश रणनीति बनाते हैं। शॉर्ट सेलर अपनी रिपोर्ट में जो तस्वीर पेश करते हैं उससे संबंधित कंपनियों के शेयर पर अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही तरह के प्रभाव पड़ते हैं तो रिपोर्ट के चलते शेयर के गिरने से खरीददार खरीद कर बाद में अच्छा मुनाफा कमा लेते हैं।

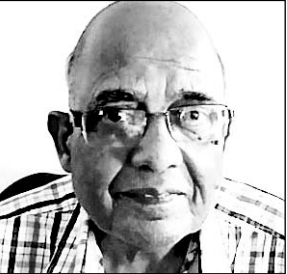
खैर यह एक रणनीति हो सकती है पर शॉर्ट सेलरों द्वारा जारी रिपोर्टें में तथ्यों से हेराफेरी कर केवल निशाना बनाकर कंपनी को नुकसान पहुंचाने का प्रयास

किया जाता है तो यह किसी भी दृष्टि से उचित नहीं उ्हराया जा सकता। विदेशी कंपनियों खासकर हिण्डनवर्ग और वायसराय शॉर्ट सेलर ने भारतीय शेयर बाजार खासतौर से अड़ानी और वेदांता समूह को नुकसान पहुंचाने और इनकी साख को प्रभावित करने का प्रयास किया हालांकि हिण्डनवर्ग की चाल कुछ समय तक ही सफल रह सकी तो वायसराय की चाल दूसरे दिन ही धराशाही हो गई। पर इससे सबक लिये जाने की भी आवश्यकता हो जाती है।

ऐसा नहीं है कि शॉर्ट सेलर द्वारा इस तरह का कुप्रयास पहली बार किया गया हो। स्पेन की गिफोफेस और रिव्स की टेमेनोस इनका शिकार हो चुकी है। यह दोनों ही मल्टीनेशनल कंपनियां रही हैं और इनकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साख व पहचान रही है। स्पेन की गिफोफेस बायोथेराफ्यूटिक्स और खासतौर से प्लाज्मा व रिव्स की टेमेनोस बैंकिंग सॉफ्टवेयर क्षेत्र की कंपनी रही है। इसी तरह से डच कंपनी स्ट्राइन हॉफ और वायकार्ड आदि कंपनियां इस रिपोर्टों की शिकार हो चुकी है। यह दूसरी बात है कि किसी पर सकारात्मक तो किसी पर नकारात्मक प्रभाव पड़े।

दरअसल शॉर्ट सेलरों की रिपोर्ट निवेश रणनीति कम सट्टे जैसा काम अधिक करती है। शॉर्ट सेलरों द्वारा जारी रिपोर्ट प्रायः संदेह के घेरे में रही हैं। इनके

दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का पर्व “करवा चौथ”



डॉ. जे. के. गर्ग

सनातन धर्मा महिलाएं कार्तिक कृष्ण दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का पर्व करवा चौथ का पर्व अपने जीवन साथी के दीर्घायु स्वस्थ और खुशहाल रहने के लिये व्रत रखकर शाम को चन्द्रमा के दर्शन कर उनको अर्क दे कर

छलनी से अपने प्राण प्रिय पति को देख कर अपने पति के हाथों से जल पीकर अपना व्रत खोलती है । करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह भारत के जम्मू हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में मनाया जाने वाला पर्व है। यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। यह पर्व सौभाग्यवती (सुहृगिन) स्त्रियों मनाती है। यह व्रत सबसे सूर्योदय से पहले लगभग 4 बजे से आरंभ होकर रात में चंद्रमा दर्शन के उपरंत संपूर्ण होता है। पति की दीर्घायु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचन्द्र गणेश जी की अर्चना की जाती है। संस्कृत में इसको कारक चतुर्थी तेलुगु में अटल त्दी कहा जाता है ।

यह व्रत 12 वर्ष तक अथवा 16 वर्ष तक लगातार प्रति वर्ष किया जाता है। अवधि पूरी होने के पश्चात इस व्रत का उद्घापन (उपसंहार) किया जाता

है। किन्तु जो सुहागिन स्त्रियां आजीवन रखना चाहें वे जीवन भर इस व्रत को कर सकती हैं। इस व्रत के समान

सौभाग्यदायक व्रत अन्य कोई दूसरा नहीं है। भारत देश में वैसे तो चौथ माता जी के कई मंदिर स्थित हैं, लेकिन सबसे प्राचीन एवं सबसे अधिक ख्याति प्राप्त मंदिर राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा गाँव में स्थित है। चौथ माता के नाम पर इस गाँव का नाम बरवाड़ा से चौथ का बरवाड़ा पड़ गया। चौथ माता मंदिर की स्थापना महाराजा भीम सिंह चौहान ने की थी।

करवा चौथ के व्रत संबंध में पौराणिक एवं लोक कथाएँ।

कहा जाता है कि शंकरजी ने माता पार्वती को करवा चौथ के व्रत का महत्व बताया था। इसके अलावा द्रौपदी ने अर्जुन के लिए यह व्रत रखा था। तभी से पत्नियां अपने पति की सलामती के लिए एवं उपावास रखती हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार करवा नाम की स्त्री अपने पति के साथ नदी के किनारे के गांव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान कर रहा था तभी एक मगरमच्छ ने उसका पैर पकड़ लिया। वह मृुष्य अपनी पत्नी को पुकारने लगा। उसकी आवाज सुनकर पत्नी करवा वहां पहुंची और मगरमच्छ को कच्चे धागे से बांध दिया। इसके बाद महिला यमराज के पास पहुंची और विनती करते हुए कहा कि हे भगवान! मगरमच्छ को आप नरक में ले जाओ। यमराज बोले, उसकी आगु शेष है। उसे नहीं मार सकते। इस पर करवा बोली, अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो मैं आप को श्राप दें दूंगी। यह सुनकर यमराज मगरमच्छ को यमपुरी भेज दिया। तभी से उस

महिला को करवा माता कहने लगे और उनकी पूजा की जाती लगी।

साहूकार के सात लड़के, एक लड़की की कहानी:–

एक साहूकार के सात लड़के और एक लड़की थी। एक बार कार्तिक मास की कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि को सेठानी सहित उसकी सातों बहुएं और उसकी बेटी ने भी करवा चौथ का व्रत रखा। रात्रि के समय जब साहूकार के सभी लड़के भोजन करने बैठे तो उन्होंने अपनी बहन से भी भोजन कर लेने को कहा। इस पर बहन ने कहा– भाई, अभी चांद नहीं निकला है। चांद के निकलने पर उसे अर्थ्य देकर ही मैं आज भोजन करूंगी।

साहूकार के बेटे अपनी बहन से बहुत प्रेम करते थे, उन्हें अपनी बहन का भूख से व्याकुल चेहरा देख बेहद दुःख हुआ। साहूकार के बेटे नगर के बाहर चले गए और वहां एक पेड़ पर चढ़ कर अग्न जला दी। घर वापस आकर उन्होंने अपनी बहन से कहा– देखो बहन, चांद निकल आया है। अब तुम उन्हें अर्थ्य देकर भोजन ग्रहण करो। साहूकार की बेटी ने अपनी भाभियों से कहा– देखो, चांद निकल आया है, तुम लोग भी अर्थ्य देकर भोजन कर लो। नन्द की बात सुनकर भाभियों ने कहा– बहन अभी चांद नहीं निकला है, तुम्हारे भाई धोखे से अग्नि जलाकर उसके प्रकाश को चांद के रूप में तुम्हें दिखा रहे हैं। साहूकार की बेटी अपनी भाभियों की बात को अनुसूी करते हुए भाइयों द्वारा दिखाए गए चांद को अर्थ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकार करवा चौथ का व्रत भंग करने के कारण चौथ माता साहूकार की लड़की पर क्रोधित हो गई। चौथ माता की अप्रसन्नता के कारण उस लड़की का पति उसके सुसराल में बीमार पड़

द्वारा जारी रिपोट तो कई बार केवल निशाना बनाने जैसी और कंपनियों के साख के साथ खिलवाड़ करने जैसी हो जाती है। अड़ानी और वेदांता इसके जीते जागते उदाहरण है। ऐसा नहीं है कि हिण्डनवर्ग या वायसराय ही शॉर्ट सेलर हो, बल्कि इस तरह की बहुत सी संस्थाएं काम कर रही है।

सीएनएमबी, गोथम सिटी रिसर्च, अमेरिका की मडीवाटर्स, ब्रिटिश संस्था शैडोफाल आदि भी इस तरह की संस्थाएं काम कर रही है। देखा जाए तो यह कंपनियों के लेखों और गतिविधियों को अपने प्रोतों से प्राप्त कर उसके आधार पर रिपोट तैयार करती है और कंपनियां द्वारा किये जा रहे कार्यों को अपनी तरह से परिभाषित करती है। इनकी रिपोर्ट्स जब प्रकाशित होती है तो उससे एक बार तो सनसनी फैल जाती है और संबंधित कंपनियां अपनी सफाई देने में ही पूरी ताकत झोंक देती है। मजे की बात यह है कि तथ्यों के नकारात्मक या सकारात्मक विश्लेषण को वह सही बताते हैं और आम निवेशक इससे प्रभावित हो जाता है। हिण्डनवर्ग की अड़ानी के खिलाफ रिपोट ने केवल अड़ानी कंपनियों को ही नहीं हलिया अपितु राजनीतिक पैतरेबाजी और आरोप प्रत्यारोप भी खूब चले।

जहां तक विदेशों की बात है तो

ऐसी संस्थाओं की गतिविधियों की निगरानी भी की जाती है। अमेरिका में एसईसी लगातार निगरानी करती रहती है तो योरोप में इन संस्थाओं की गतिविधियों पर नजर रखी जाती है। अड़ानी और वेदांता समूह की साख खराब करने पर जिस तरह के प्रयास शॉर्ट सेलरों द्वारा किया गया उसे देखते हुए भारत में भी नियामक प्रावधान किये जाने की आवश्यकता है।

सवाल इन संस्थाओं की रिपोट की विश्वसनीयता होने या ना होने का नहीं होता, बल्कि यह संस्थाएं अपने हिडन एजेंडका की पूरा करने में सफल हो जाती है। भारत की इंगवर्नर्स रिसर्च का मानना है कि शॉर्ट सेलर संस्थाओं की गतिविधियों की निगरानी व्यवस्था नहीं होने से आसानी से यह भारतीय बाजार को प्रभावित कर देती है। ज़िरोधा के संस्थापक नितिन कामथ ने शॉर्ट सेलिंग तंत्र की संरचनात्मक कमियों को उजागर किया है तो ऐसे हालात में देश में शॉर्ट सेलर संस्थाओं के लिए नियामक संस्था व प्रावधानों की आवश्यकता हो जाती है जिससे तथ्यों व आंकड़ों का गलत विश्लेषण कर किसी को नुकसान पहुंचाने और निवेशकों को प्रमित करने से बचाया जा सके।

–डॉ. सुबोध अग्रवाल, अतिरिक्त मुख्य सचिव, आवश्यकता अनुसार सरकार।



पंडित अनिल शर्मा

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृष, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरु-मिथुन, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन ३:20 तक है। आज रोहिणी व्रत, व्यतिपात पुण्य है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:54 से 9:20 तक, चर 12:14 से 1:40 तक, लाप अमृत 1:40 से 4:33 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:28, सूर्यास्त 5:59

राशिफल

शनिवार 11 अक्टूबर, 2025

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, रोहिणी नक्षत्र दिन ३:20 तक, व्यतिपात योग दिन 2:07 तक, तैत्तिल करण सायं 4:44 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 2:24

से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृष, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरु-मिथुन, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन ३:20 तक है। आज रोहिणी व्रत, व्यतिपात पुण्य है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:54 से 9:20 तक, चर 12:14 से 1:40 तक, लाप अमृत 1:40 से 4:33 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:28, सूर्यास्त 5:59

मेघ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ और व्यावसायिक कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिवचर्या में सुधार होगा। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आज व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में आपसी वाद-विवाद हो सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक संदेश प्राप्त होगा। अटकें हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

का मोल समझने के अवसर दिए जाएँ। काउंसिलिंग और संवाद की परंपरा को शिक्षा का हिस्सा बनाना होगा।

हर रोज अखबार में ऐसे हादसे पढ़कर दिल बैठ जाता है। लेकिन हमें इन्हें केवल ‘खबर’ बनाकर भूलना नहीं है। ये घटनाएँ चेतावनी हैं कि अगर हमने समझ रक्खे तो अपने मृत्युओं को नहीं थापा, तो कल का समाज और भी भयावह होगा। आज सबसे बड़ी जरूरत है कि हम अपने घर को फिर से ‘संस्कारों का विद्यालय’ बनाएं। बच्चों को सिखाएँ कि सोशल मीडिया पर लाइक्स से बड़ा सुख माँ की मुस्कान और पिता का आशीर्वाद है। बुजुर्गों को वह सम्मान दें, जिसके वे हकदार हैं। मासूम बच्चों की डूबी हुई किलकारी और माँ की टूटी हुई साँसें हमें यही संदेश देती हैं-रिश्तों को बचाइए, संवेदनाओं को जगाइए। क्योंकि अगर रिश्ते टूटें, तो ईंसानियत भी टूट जाएगी।

– मुरारी गुप्ता, (लेखक भारतीय सूचना सेवा के अधिकारी हैं)

संवेदनाओं से सूना होता आंगन

संयुक्त परिवार टूट चुके हैं, बच्चों और बुजुर्गों के बीच दूरियां बढ़ गई हैं। यही दूरियां कभी मासूम बच्चों की जान ले लेती हैं, तो कभी माँ की। समस्या गहरी है, लेकिन उपाय असंभव नहीं। समाज और सरकार को मिलकर रिश्तों को बचाने की पहल करनी होगी। सरकार ऐसी नीतियाँ बनाए जो परिवारों को जोड़ें और माता-पिता की उपेक्षा पर सख्त कानून लागू करें।

लेकिन केवल कानून काफी नहीं है। हमें अपनी सनातन संस्कृति से भी सीखना होगा। हमारे शास्त्रों ने सिखाया-**मातृदेवो भव, पितृदेवो भव।** अगर इस शिक्षा को फिर से अपनाया जाए, तो परिवारों में सम्मान और अपनाना लौट सकता है। संत-महात्माओं को अपने प्रवचनों में रिश्तों की महत्ता पर जोर देना चाहिए। विद्यालयों की भूमिका भी अष्टम है। बच्चों को केवल गणित और विज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाई जाए। उन्हें बुजुर्गों के साथ समय बिताने, सेवा करने और रिश्तों